Lecture No - 28

By

अलाउद्दीन खिलजी

Dr. Komal (Guest Professor)
SNSRKS, College, Saharsa

B.A - 2nd Part, Paper - IIIrd

Scanned with CamScanner

प्रश्न-1

Q:- अलाउद्दीन खिलजी कौन थे? उसने सिंहासन कैसे प्राप्त किया? उसको निरंकुश शासक क्यों कहा जाता है?

उत्तर:- अलाउद्दीन खिलजी, खिलजी वंश के प्रथम शासक जलालुद्दीन खिलजी का भतीजा तथा दामाद था। मलिकु छज्जू के पश्चात जलालुद्दीन ने उसको 'कड़ा' शासक नियुक्त किया था। 1292 ई० में अलाउद्दीन ने मलवा तथा भिलसा के प्रांतों को लूटकर अतुल धनराशि जलालुद्दीन को दी थी। अलाउद्दीन स्वयं महत्वाकांक्षी था। वह दिल्ली सल्तनत का स्वामी बनना चाहता था।

अपने कार्यों के लिए अलाउद्दीन केवल ईश्वर के प्रति उत्तरदायी था और धरती पर ईश्वर का "नायाब" होने का दावा करता था। उसकी प्रजा का कर्तव्य उसकी आज्ञा का पालन करना और आवश्यकता पड़ने पर बिना किसी प्रतिवाद के कष्ट उठाना था। उसने खलीफा का नाम सिक्कों

Scanned with CamScanner

पद से हटवा दिया और स्वयं 'यमीनुल खिलाफत नासिर-ए-अमीरूल मौमिनीन' की उपाधि धारण की। इस प्रकार उसने खुदा के बाद अपना स्थान बना लिया।

यही कारण है था कि उसने अमीरों को दासता की श्रेणी में ला दिया। हिन्दू जमीन्दार और व्यापारी वर्ग को दरिद्र बना दिया जिससे कि विद्रोह शब्द उनकी जबान से न निकल सके।

➡ अलाउद्दीन ने निम्नांकित निरंकुशता के कार्य किए जिसके आधार पर उसे निरंकुश शासक कहा जाता है।

(i) **अमीर वर्ग का दमन**:- अलाउद्दीन ने अमीरों पर निम्नांकित दासत्व की शर्तें थोप दीं-

- सुल्तान अमीरों का उत्तराधिकारी हो गया।
- उससे संबंधित कोई भी विवाह एवं विवाद सुल्तान की आज्ञा के बिना नहीं हो सकता था।

Scanned with CamScanner

• उनकी सामाजिक गोष्ठियों आदि पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

• अमीरों के मरणोपरांत उनके पुत्र सुल्तान के दास होंगे। सुल्तान से वे इतने भयभीत हो गए कि जोर से बोलने के संकेतों और फुसफुसाहट से अपने भावों का आदान-प्रदान करने लगे।

(ii) भूमि अनुदानों का अन्त :- फारसी कहावत के अनुसार फसाद की तीन जड़ है- जर, जन और जमीन। अलाउद्दीन फसाद के कारणों को नष्ट कर देना चाहता था। इसीलिए उसने एक आदेश द्वारा साम्राज्य की सारी भूमि 'खालसा' करा ली। इस प्रकार, लोगों का इनाम, मिल्क अथवा वक्फ में दी गई भूमि पर सरकार का अधिकार हो गया।

(iii) भूमि कर व्यवस्था :- हिन्दू जमींदारों की शक्ति को कुचलने हेतु उसने उपज का 50% भूमि कर निर्धारित किया। फलतः जमींदार लोग, जो आराम और निष्क्रियता का जीवन

बिताने के अभ्यस्त हो गए थे, उनकी स्थिति अब काफी दयनीय हो गई थी।

(iv) कठोर दण्ड विधान :-

अपने निरंकुशवाद को कायम रखने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने कठोर दण्ड विधानों की रचना की। गुजरात विजय से लौटते हुए जब रास्ते में नव मुस्लिमों ने विद्रोह किया तो सुल्तान ने इसका बदला उनकी स्त्रियों एवं बच्चों तक से लिया। कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि "ऐसा दण्ड कभी बुजुर्गों से भी नहीं सुना था। वस्तुतः बड़े-से बड़े पदाधिकारी भी उसे सलाह नहीं दे सकते थे। वे सब के सब केवल उसकी आज्ञा का पालन करनेवाले नौकर मात्र थे।

(v) विरोधियों का दमन :-

निरंकुशतावाद

निरंकुशतावाद के मार्ग में सुल्तान ने जिसे भी कांटा समझा, उसे उखाड़ फेंका।

जब जफर खां ने सल्दी को बुरी तरह परास्त किया तो सुल्तान उसे ईर्ष्या की दृष्टि से देखने लगा। यही कारण था कि जब कुतुलुग ख्वाजा के आक्रमण के समय ~~मकर~~ जफर खाँ मंगोलों का दूर तक पीछा करने के कारण घिर गया तो सुल्तान ने उसकी कोई सहायता नहीं की। फलत: वह मारा गया।

(vi) मंगोल कैदियों का जनता में प्रदर्शन :-

अपने निरंकुशवाद को शक्ति प्रदान करने हेतु उसने उन मंगोल कैदियों का जनता में प्रदर्शन कराया, जो कि अलिबेग, तारातक के आक्रमण (1303 ई.) में बन्दी बनाए गए थे। जनता को अत्यधिक भयभीत और आतंकित करने के उद्देश्य से ही मंगोल कैदियों का जनता में प्रदर्शन किया गया था।

(vii) भारत विजय :-

सुल्तान की उत्तर एवं दक्षिण भारत की विजय भी किसी सीमा तक उसकी निरंकुशता का परिचायक है

Scanned with CamScanner

चूँकि अलाउद्दीन किसी को भी अपने समक्ष नहीं देख सकता था, यही कारण था कि उसने उत्तर और दक्षिण भारत को विजय की थी।

निष्कर्ष :- इस तरह अलाउद्दीन एक असीमित रूप से स्वेच्छाचारी शासक था जो किसी भी कानून से बंधा नहीं था, किसी भी नैतिक प्रतिबन्ध के अधीन न था और अपने सिवा किसी का मार्गदर्शन स्वीकार नहीं करता था। लोगों के पास कर्त्तव्य थे परन्तु अधिकार नहीं। वे केवल उसके आदेशों का पालन करने को जीवित रहते थे।

"राज्य के हित के लिए जो भी मुझको ठीक लगता है अथवा जो भी आपत्ति काल में मुझे देश के लिए उचित जान पड़ता है, मैं करता हूँ। इसका कयामत के दिन क्या परिणाम होगा, इसकी मुझको चिंता नहीं।"

Scanned with CamScanner